लेखक : डॉ. छोटू नारायण सिंह

जयचंद के आँसू

काव्य नाटक

निर्देशक : सुनिता भारती

www.faces.org.in/jka.html

संक्षिप्त विवरण

नाटक का नाम	:	**जयचंद के आँसू**
लेखक	:	डॉ. छोटू नारायण सिंह
निर्देशन	:	सुनिता भारती
दिग्दर्शन	:	श्री शिवनारायण झा 'कुणाल'
ऐतिहासिक तथ्य विमर्श	:	डॉ. शंकर सुमन
कलाकार	:	**सुनिता भारती** (संयुक्ता), **डॉ. शंकर सुमन** (मुहम्मद गोरी), **विक्रम कुमार** (जयचंद), **आमिर हक** (पृथ्वीराज), **रवि आनंद** (जयचंद की आत्मा), **अशुतोष सर्राफ** (सूत्रधार), **रोहन मिश्र** तथा **चिन्मय माजी** (कथा वाचक नागरीक) **कुंदन कुमार** तथा **मो. सदरुद्दीन** (अफगान सैनिक)
प्रकाश	:	उपेन्द्र कुमार
वस्त्र-विन्यास	:	अरविन्द कुमार
मेकअप	:	अंजू कुमारी
आर्ट डायरेक्टर	:	आदित्य सिंह / चिन्मय माजी
मंच प्रबंधन	:	मनोज कुमार
प्रॉपर्टीज	:	विजय कुमार विश्वकर्मा
वीडियोग्राफी एवं फोटोग्राफी	:	विमलेश कुमार
मंच सहयोग	:	अशुतोष सर्राफ, रोहन मिश्र, अंकित कुमार, चिन्मय माजी, आदित्य सिंह, कुंदन कुमार, विक्रम कुमार एवं रवि आनंद
विशेष आभार	:	बिहार आर्ट थिएटर एवं श्री प्रदीप गांगुली
प्रस्तुतकर्ता	:	अरविन्द कुमार फाउंडेशन फॉर आर्ट कल्चर एथिक्स एंड साइंस (फेसेस) कामता सिंह लेन, पूर्वी बोरिंग कैनाल रोड, पटना - 800001

महत्वपूर्ण लिंक:

विडियो: https://youtu.be/WbIY5XJcQ7c

फोटो-स्लाइड-शो: https://youtu.be/-OuSHye4xjQ

वेब-पेज: www.faces.org.in/jka.html

नाट्य-परिचय

प्रस्तुत काव्य नाटक "जयचंद के आँसू", ख्यात-वृत्त कथाओं की परंपरा में प्रसिद्द नाटककार और कवि डॉ. छोटू नारायण सिंह द्वारा लिखा गया एक प्रबंध-काव्य का नाट्य-रूप है। आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा के अनुसार, 'इस नाटक में एक ऐसी मनोवैज्ञानिक स्थिति को दिखाने का प्रयास किया गया है जो प्रायः अभी तक अछूती है'।

1192 में मुहम्मद गोरी को आमंत्रित करने के बाद जो अनेक घटना क्रम चलते हैं और जिनकी परिणति पृथ्वीराज की मृत्यु और भारत की पराधीनता में होती है, उससे जयचंद अनुद्वेलित नहीं रहा होगा। उसके मन में भी उत्ताप की अग्नि जलती है और उसे अपने कुकृत्यों के लिए गहरा पश्चाताप होता है। यही इस काव्य की कथा-वास्तु है। जयचंद की मृत्यु की पूर्व-रात्रि में उसकी मनःस्थिति का बहुत ही जीवंत चित्रण है, जिसमें उसके ह्रदय में जलती पश्चाताप की ज्वाला एवं जीवन काल की परिस्थिजन्य विवशताओं की अच्छी-बुरी स्मृतियाँ एक-एक कर आती और रुलाती हैं। जाहिर है, इस काव्य में देश-भक्ति की अभिव्यंजना प्रमुख है, जो प्रणम्य है।

पृथ्वीराज को कैद करने के बाद मुहम्मद गोरी अपने सहयोगी जयचंद पर भी आक्रमण करता है और उसे राज-च्युत कर देता है। जयचंद जब गोरी से इस अनपेक्षित आक्रमण का कारण पूछता है तो गोरी जयचंद को उसके कुकृत्यों के लिए धिक्कारते हुए अपने प्रतिपक्षी पृथ्वीराज के शौर्य और राष्ट्रभक्ति के लिए उसके सर्वोत्सर्ग की खुले ह्रदय से प्रशंसा करता है। यही इस काव्य नाटक की विशेषता है, जहाँ 'आक्रामक' भी पृथ्वीराज जैसे राष्ट्र-भक्तों के लिए आदर का भाव रखता है किन्तु गद्दारों से नफरत करता है, भले ही गद्दारों ने उसके विजय अभियान में उसका साथ दिया हो।

जयचंद को धिक्कारते हुए गोरी का यह कथन कि,

हो बुजदिल की क़द्र, दोस्त यह बात बहुत खोटी है; गद्दारों को सजा मौत की सजा बहुत छोटी है।

सजा मौत से भी बढ़कर होती कुछ अगर जहां में; देता तुझको वही, किन्तु ऐसी कुछ सजा कहाँ है?

एक विचारोत्तेजक अभिव्यक्ति है, जो 'देश-द्रोह' जैसे कुकृत्यों की भर्त्सना के साथ 'देश-प्रेम' की स्तुति करता है।

जयचंद-सुता संयुक्ता की, पिता जयचंद को संबोधित यह कथन,

ऊँगली दुखती थी नैहर में, राजवैद्य आते थे; आई जब ससुराल हाल प्रतिक्षण पूछे जाते थे।

किन्तु आपने मेरी वह सुविधाएं क्षण में धोईं; ह्रदय दुःख रहा, हाल पूछने वाला आज न कोई।

द्वेष-द्रोह की कारुणिक परिणति की सहज और जीवंत अभिव्यक्ति है।

उद्देश्य

हिंदी काव्य प्रबंध की परंपरा में "जयचंद के आँसू" एक अद्भुत एवं विरल प्रयोग है। यह काव्य, 'नायकों' की स्तुति में लिखे गए प्रबंधों के उलट एक 'खलनायक और देश-द्रोही' के आत्म-ग्लानि की अभिव्यंजना है। लोक-शुति परंपरा के आधार पर लिखी गयी इस कृति की नाट्य प्रस्तुति का प्रधान उद्देश्य समाज, ख़ास कर युवा समाज में भारतीय संस्कृति के मूल विधायक तत्वों और राष्ट्र प्रेम की भावना को संप्रेषित करना है। आपसी विद्वेष, मद और भौतिक स्वार्थ से अभिभूत हो कर व्यक्ति अपनी संस्कृति और राष्ट्र से द्रोह तो करता है, किन्तु इसका परिणाम स्वयं उसके लिए भी घातक होता है।

प्रथम मंचन

29 जनवरी 2018, संध्या 6:30 बजे, कालिदास रंगालय, पूर्वी गाँधी मैदान

(संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के CFPGS के अंतर्गत मंचित)

मुख्य अतिथि	:	डॉ. विमल तिवारी अवर निदेशक, पटना संग्रहालय, पटना.
विशिष्ट अतिथि:	:	डॉ. उमेश चन्द द्विवेदी पूर्व निदेशक, पटना संग्रहालय, पटना. श्री शिव नारायण झा ‘कुणाल’ लेखक एवं प्रसिद्द रंगकर्मी
सम्मानित अतिथि:	:	प्रोफ. अमिय नाथ चटर्जी डॉ. प्रेमलता मिश्र

प्रदर्शन पूर्व तैयारी

मंच की तैयारी

प्रकाश व्यवस्था

मेक-अप

प्रदर्शन

मुख्या अतिथि, विशिष्ठ अतिथि एवं सम्मानित अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन

प्रस्तुति

मीडिया कवरेज

प्रभात खबर 30 जनवरी 2018

नाट्य मंचन | कालिदास रंगालय और गांधी मैदान में किया गया नाटक का मंचन

...और जयचंद पर आक्रमण कर देता है मुहम्मद गोरी

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

आपसी विद्वेष, मद और भौतिक स्वार्थ से अभिभूत हो कर व्यक्ति अपनी संस्कृति और राष्ट्र से द्रोह तो करता, लेकिन इसका परिणाम स्वयं उसके लिए भी घातक होता है. कुछ ऐसी कहानी देखने को मिली कालिदास रंगालय के मंच पर यहां सोमवार को संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार के सौजन्य से डॉ छोटू नारायण सिंह रचित प्रबंध काव्य जयचंद के आंसू नाटक की काव्य नाट्य की प्रस्तुति हुई. इस नाटक में सभी कलाकारों ने अपनी-अपनी भूमिकाओं को बखूबी निभाया. नाटक के दमदार डायलोग्स को सुन और नाटक के दृश्यों को देखते हुए दर्शकों ने भरपूर तालियां बजायी. नाटक का निर्देशन सुनिता भारती द्वारा किया गया.

नाटक में दिखाया गया कि मुहम्मद गोरी को 1192 में आमंत्रित करने के बाद, जो अनेक घटना क्रम चलते हैं और जिनकी परिणति पृथ्वीराज की मृत्यु और भारत के पराधीनता में होती है. उसे जयचंद अनुद्वेलित नहीं कर रहा होगा. पृथ्वी राज को कैद करने के बाद मुहम्मद गोरी अपने सहयोगी जयचंद पर भी आक्रमण कर देता है. पहले दृश्य में जब जयचंद गोरी इस अनपेक्षित आक्रमण का कारण पूछता है, तो गौरी जयचंद को उसके कुकृत्यों के लिए धिक्कारते हुए अपनी प्रतिपक्षी पृथ्वीराज के शौर्य और राष्ट्रभक्ति के लिए उसके सर्वोत्सर्ग की खुले हर्दय से प्रशंसा करता है. यही इस काव्य नाटक की विशेषता है.

कालिदास रंगालय में नाटक प्रस्तुत करते कलाकार.

हे राम ... बापू को बिहारी जन का सलाम

पटना. महात्मा गांधी के 70वीं शहादत के अवसर पर पटना इप्टा और शहर के दो दर्जन से अधिक सांस्कृतिक सामाजिक संगठनों के संयुक्त तत्वावधन में दो दिवसीय विशेष कार्यक्रम 'हे राम... बापू को बिहारी जन का सलाम' की शुरुआत भिखारी ठाकुर रंगभूमि, दक्षिणी गांधी मैदान में हुआ. सोमवार को कार्यक्रम की शुरुआत में बिहार इप्टा के महासचिव तनवीर अख्तर ने दो दिवसीय कार्यक्रम की रूपरेखा रखते हुए कहा कि पटना के कलाकार, साहित्यकार, संस्कृतिकर्मी और समाजिक कार्यकर्ता अपने अंदाज में बापू को श्रद्धांजलि देने के लिए विशेष कार्यक्रम 'हे राम...बापू को बिहारी जन का सलाम' का आयोजन कर रहे है. इसके तहत नाटक, गीत, कविता पाठ और जनसंवाद के जरिये आम जन से महात्मा गांधी की शहादत के मायने और वर्तमान समाजिक-सांस्कृतिक मुद्दों पर बहुआयामी विमर्श किया जायेगा. उन्होंने कहा कि आज हमारे देश में जो माहौल पैदा किया जा रहा है, उसमें गांधी की प्रासंगिकता काफी बढ़ गयी है.

हिन्दुस्तान 30 जनवरी 2018

हो बुजदिल की कद्र, दोस्त यह बात बहुत खोटी है...

कालिदास रंगालय

पटना | कार्यालय संवाददाता

एक काव्यात्मक प्रस्तुति। कलाकार छंदों में संवाद बोलते रहे और लोग मग्न होकर देखते रहे। कालिदास रंगालय में सोमवार शाम एक अलग तरह की प्रस्तुति देखने को मिली। फेसेस के कलाकारों ने डॉ छोटू नारायण सिंह द्वारा लिखित 'जयचंद के आंसू' नाटक पेश किया। सुनिता भारती के निर्देशन में इसका मंचन हुआ।

इस नाटक के केंद्र में खलनायक था। एक ऐसा खलनायक जिसे आज भी इतिहास माफ नहीं कर पाया है। गद्दारी के लिए उसके नाम का प्रयोग होता है। जी हां, 1192 में हुए मोहम्मद गोरी और पृथ्वीराज के युद्ध के दौरान गद्दारी करनेवाले जयचंद पर केंद्रित यह नाटक था।

नाटक के कलाकार थे

सुनिता भारती, डॉ शंकर सुमन, कुमार विक्रम, आमिर हक, रवि आनंद, आशुतोष सर्राफ, रोहन मिश्र, चिन्मय माजी, कुंदन कुमार, मो सदरुद्दीन ।

राष्ट्रीय सहारा 30 जनवरी 2018

राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

टैक्सटाईल,निर्माण,हेल्थकेयर एवं वित क्षेत्र

जयकांत सिंह ,भावना वर्मा,भवेश कुमार सिंह

अपील की है।

निदेशक सह मिडिया प्रभारी सम्राट झा ने दी।

ऐतिहासिक काव्य नाटक 'जयचंद के आंसू' का मंचन

पटना (एसएनबी)। डॉ छोटू नारायण सिंह लिखित एवं भारतीय संस्कृति-साहित्य के लेखक एवं विज्ञान लेखक अरविन्द कुमार द्वारा नाट्य-रूपांतरित एवं सुनिता भारती द्वारा निर्देशित ऐतिहासिक काव्य नाटक 'जयचंद के आंसू' का मंचन किया गया। नाटक का प्रस्तुतीकरण संस्कृति संरक्षण और शिक्षा सुधार के लिए कार्यरत संस्था 'फेसेस' द्वारा किया गया। पटना रंगमंच के लिए यह पहला काव्य नाटक है। इस अवसर पर पटना संग्रहालय के अपर निदेशक डॉ. विमल तिवारी मुख्य अतिथिएवं डॉ. उमेश द्विवेदी और शिवनारायण झा कुणाल विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

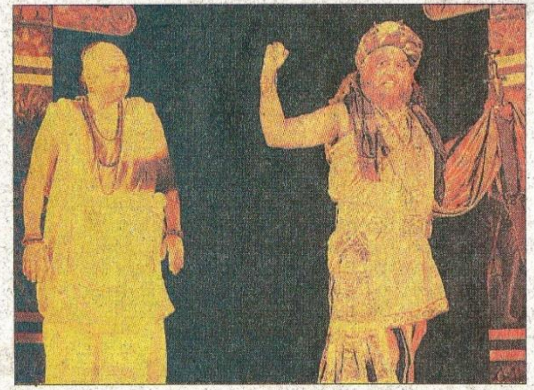

नाटक का मंचन करते कलाकार।

कथासार : 1192 में मुहम्मद गोरी को आमंत्रित करने के बाद जो अनेक घटनाक्रम चलते हैं और जिनकी परिणति पृथ्वीराज की मृत्यु और भारत की पराधीनता में होती है, उससे जयचंद अनुद्वेलित नहीं रहा होगा। उसके मन में भी उत्ताप की अग्नि जलती है और उसे अपने कुकृत्यों के लिए गहरा पश्चाताप होता है। नाटक में दिखाया गया है कि आपसी विद्वेष, मद और भौतिक स्वार्थ से अभिभूत हो कर व्यक्ति अपनी संस्कृति और राष्ट्र से द्रोह तो करता है, किन्तु इसका परिणाम स्वयं उसके लिए भी घातक होता है। पृथ्वीराज को कैद करने के बाद मुहम्मद गोरी अपने सहयोगी जयचंद पर भी आक्रमण करता है और उसे राज-च्युत कर देता है। पहले दृश्य में जब जयचंद गोरी से इस अनपेक्षित आक्रमण का कारण पूछता है तो गोरी जयचंद को उसके कुकृत्यों के लिए धिक्कारते हुए अपने प्रतिपक्षी पृथ्वीराज के शौर्य और राष्ट्रभक्ति के लिए उसकी खुले हृदय से प्रशंसा करता है। यही इस काव्य नाटक की विशेषता है, जहां विरोधी भी पृथ्वीराज जैसे राष्ट्र-भक्तों के लिए आदर का भाव रखता है किन्तु गद्दारों से नफरत करता है, भले ही गद्दारों ने उसके विजय अभियान में उसका साथ दिया हो।

शेष पांच दृश्यों में अपनी मृत्यु के पहले की एक रात में, जयचंद की मनःस्थिति को दिखाया गया है, जिसमें उसके हृदय में जलती पश्चाताप की ज्वाला एवं जीवन काल की परिस्थिजन्य विवशताओं की अच्छी-बुरी स्मृतियों का सजीव चित्रण है।

नाटक चाणक्य का मंचन

पटना (एसएनबी)। पटना विश्वविद्यालय शताब्दी वर्ष समारोह के अंतर्गत स्थीनय एसकेएम में धर्मजम की प्रस्तुति व मनोज जोशी द्वारा निर्देशित व अभिनीत ऐतिहासिक हिंदी नाटक 'चाणक्य' का मंचन किया गया। इस अवसर पर कुलपति प्रो रासबिहारी प्रसाद सिंह, प्रति कुलपति प्रो डॉली सिन्हा, प्रो शंकर ए दत्त, डॉ शेफाली राय सहित बड़ी संख्या शिक्षक व छात्र मौजूद थे।

दैनिक जागरण 30 जनवरी 2018

गद्दारों के लिए मौत की सजा भी बहुत छोटी है

कालिदास रंगालय के प्रेक्षागृह में नाटक 'जयचंद के आंसू' का मंचन कलाकारों ने पृथ्वीराज चौहान की शौर्य गाथा को किया पेश

'हो बुजदिल की कद्र, दोस्त यह बात बहुत खोटी है, गद्दारों को सजा मौत की सजा से भी बहुत छोटी है'। 'सजा मौत से भी बढ़कर होती कुछ अगर जहां में, देता तुझको वही किंतु ऐसी कुछ सजा कहां है'। मोहम्मद गौरी ने इसी संवाद के द्वारा जयचंद को सजा दे रहा होता है। जिसने अपने स्वार्थ के लिए देश के साथ गद्दारी की थी। काव्य की कुछ ऐसी पंक्तियां जिसके बहाने कलाकार इतिहास के पन्नों में दर्ज देश भक्त पृथ्वीराज चौहान की शौर्य गाथा को पेश कर रहे थे। वहीं मोहम्मद गौरी को पृथ्वीराज पर आक्रमण करने के लिए कन्नौज का राजा जयचंद का सहयोग करते दिखाया गया। आपसी द्वेष, मद और भौतिक स्वार्थ से अभिभूत होकर जयचंद अपनी संस्कृति और राष्ट्र से विद्रोह करता है किंतु इसका परिणाम स्वयं उसके लिए घातक होता है। प्रबंध काव्य का नाट्य-रूपांतरण पहली बार दर्शकों को देखने को मिला। फाउंडेशन फॉर आर्ट कल्चर एथिक्स एंड साइंस के बैनर तले डॉ. छोटू नारायण सिंह लिखित एवं अरविंद कुमार द्वार नाट्य- रूपांतरित एवं सुनीता भारती के निर्देशन में सोमवार को कालिदास रंगालय के प्रेक्षागृह में 'जयचंद के आंसू' का मंचन किया गया। नाटक में दिखाया गया, पृथ्वीराज चौहान का राजकुमारी संयोगिता का हरण करके कन्नौज से ले जाने के बाद राजा जयचंद का यह अपमान सीने में तीर की तरह चुभ रहा था। वह किसी कीमत पर पृथ्वीराज का विनाश चाहता था। जयचंद अकेले पृथ्वीराज से युद्ध करने का साहस नहीं कर सकता था। उसने गौरी का साथ देते हुए अपने देश में विद्रोह करता है। युद्ध में पृथ्वीराज की हार हुई और उधर देशद्रोही जयचंद का मार उसके राज्य पर अधिकार कर लिया जाता है। आक्रामक होते हुए भी पृथ्वी राज के लिए आदर का भाव रखता है किंतु वह गद्दारों से नफरत करता है।

About the Director : Sunita Bharti

Sunita Bharti, the famous young director and actor from Patna, is known for her innovative application of 'Theatre' in Education, Public Museology and promotion of Cultural/Ethical values. She has successfully used theatre in education and public museology. Her famous production "Yakshini", the first Hindi play based on the Mauryan sculpture "Didarganj Chauri Bearer Female Figure" (popularly known as Didarganj Yakshini) is the first celebrated theatrical production for Public Museology in India and first ever Hindi play based on an ancient artifact of archaeological importance.

संगिनी 9 सितम्बर 2017 दैनिक जागरण 2

नाटकों को शिक्षा का पर्याय बना रहीं सुनीता

बेमिसाल

• चारुस्मिता

यक्षिणी नाटक की धोबिन और यक्षिणी किसे याद नहीं होगी। यह रंगमंच के क्षेत्र में ऐसा प्रयोग था जिसने हर वर्ग के दर्शकों को जोड़ा। सुनीता भारती रंगमंच की एक ऐसी कलाकार हैं जिन्होंने पहली बार शिक्षा में नाटक का प्रयोग किया। रंगमंच के बैकग्राउंड से न होने के बावजूद उन्होंने नाटक को एक ऐसी दिशा दी है जिससे वह युवाओं को अपनी धरोहरों से जोड़ रही हैं। एक रिपोर्ट।

कहते हैं अगर आपमें सीखने की ललक है तो उम्र मायने नहीं रखती। पटना की मूल निवासी सुनीता की न तो बचपन से कभी रंगकर्म में रुचि रही और न ही उनके घर में कला का माहौल ही था। उनका बचपन धनबाद के मैथन में गुजरा। शिक्षा दीक्षा के बाद उनकी शादी भौतिकी के लेक्चरर अरविंद कुमार से हुई। पति के कला के क्षेत्र में गहरे रुझान के कारण जब वह पहली बार नाटक देखने गईं तो उनका रंगमंच पर दिल आ गया। कालिदास रंगालय में 'आषाढ़ का एक दिन' का मंचन चल रहा था जब सुनीता को लगा कि यह एक ऐसा माध्यम है जिससे वह कई समसामयिक मुद्दों पर काम कर सकती हैं और लोगों को जागरूक भी कर सकती हैं। इसके बाद शुरु हुआ उनके रंगमंच का सफर।

40 नाटकों में किया अभिनय

उस वक्त उनकी उम्र 29 की रही होगी जब उन्होंने थिएटर की तरफ रुख किया। वह बताती हैं कि उन्हें अभिनय ने इस कदर अपनी ओर खींचा कि उन्होंने बिहार स्कूल थिएटर में एडमिशन ले लिया। सद्गति के बाद थिएटर जगत में उनकी काफी चर्चा हुई। इसके बाद इनका सफर जो शुरू हुआ वह अब भी चल रहा है। नागमंडल, गोरा, यक्षिणी सहित अभी तक उन्होंने करीब 40 नाटकों में अभिनय किया है। इसके अलावा वह दूरदर्शन पर भी कई नाटकों में अभिनय कर चुकी हैं जिसमें डी डी किसान, कृषि दर्शन प्रमुख है। स्मिता पाटिल, हबीब तनवीर, नाना पाटेकर, रोहिणी हसन जैसे शख्सियतों को अपना आदर्श मानने वाली सुनीता बताती हैं कि अभी तो सफर की शुरुआत हुई है मंजिल मिलनी अभी बाकी है।

युवाओं को करती हैं जागरूक

सुनीता युवाओं को अपने धरोहरों के बारे में जागरूक करती हैं। शिक्षा में नाटक के प्रयोग से युवाओं को अपने धरोहर से जोड़ने का काम इन्होंने ही शुरू किया है। इसमें वह शहर के पुरातात्विक धरोहरों के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए नाटक की प्रस्तुति करती हैं। फाउंडेशन फॉर कल्चर, एथिक एंड साइंस इनकी एक संस्था है जिसके माध्यम से वह कॉलेज और स्कूल के छात्रों को जोड़ती हैं। इस संस्था में वह युवाओं को जोड़कर उन्हें अभिनय के साथ अन्य सांस्कृतिक गतिविधियां भी सिखाती हैं। इसी क्रम में इनका यक्षिणी नाटक काफी दिनों तक चर्चा का विषय भी रहा था। इसमें इन्होंने नाटक के माध्यम से यक्षिणी जैसी प्राचीनतम मूर्ति के बहाने पटना के तत्कालीन इतिहास को भी दिखाया था। इस नाटक में वह यक्षिणी और बुलकनी धोबिन की भूमिका में थीं। उनके इस नाटक का मंचन पटना म्यूजियम के सौ साल होने पर किया था। इसे इंडियन काउंसिल ऑफ कल्चरल रिलेशन के द्वारा भी दिखाया गया। वह बताती हैं कि इस संस्था का मुख्य उद्देश्य युवाओं को अपने स्वर्णिम इतिहास के बारे में कला के माध्यम से जोड़ना है। यक्षिणी के बाद बुद्ध के अस्थि कलश पर नाटक की योजना है इससे लोग बुद्ध के बारे में विस्तार से जान पाएंगे।

By her unique style of working, every time she comes up with a surprisingly maiden subject for her production. Theatre is not a medium of entertainment and raising only social issues for her but a laboratory for new inventions and application.

Jaychand ke Ansu is a poetic account of the remorseful confession of King Jaychand of Kannouj after he was defeated and humiliated by the onetime ally Muhammad of Ghor with whom he had vanquished Prithviraj Chahman and thrown India in to the hands of barbaric plunderers. The dramatization of this epical poetry by Sunita Bharti, is a unique work in theatre, both, by the content wise and from artistic point of view.

prabhatkhabar.com

प्रभात खबर

लाइफ @ पटना

जर्नलिज्म जिंदगी का

पटना, बुधवार 21.02.2018 09

निर्देशन में कदम पुख्ता करतीं ये महिलाएं

पटना रंगमंच की चर्चा पूरे देश में होती है. कई नाटक ऐसे हैं, जिन्हें देखने के लिए पटना के कलाकारों को दूसरे राज्यों से कॉल जाता है. इसमें सबसे बड़ा श्रेय पटना के कलाकारों को जाता है. पुरुष कलाकार से लेकर महिला कलाकार भी इनमें शामिल हैं. एक वक्त था, जब कुछेक महिला कलाकार ही रंगमंच पर दिखती थीं. लेकिन अब महिलाएं केवल मंच पर ही नहीं बल्कि पूरे नाटक को दिखाने की कमान संभाल रही हैं. इन्होंने निर्देशन के क्षेत्र में भी अब खुद को साबित किया है.

शिक्षा को जोड़ता है नाटक

2014 से सुनीता भारती ने रंगमंच में कदम रखा है. सुनीता भारती के पति अरविंद कुमार एक लेखक हैं. उन्होंने पहली बार नाटक देखने के लिए कालिदास रंगालय में सुनीता भारती को ले गये. वहां सुनीता भारती को लगा कि मैं भी नाटक कर सकती हूं. उसके बाद उन्होंने बीआइडी में एडमिशन करवाया और लगातार नाटक में सक्रिय रहीं. उनका पहला नाटक सद्गति में छोटी सी भूमिका में वे नजर आयी थी. उसके बाद अब तक 40 से ज्यादा नाटकों में वे दिखीं. एक्टिंग के साथ-साथ उन्होंने डायरेक्शन भी शुरू किया. सुनीता भारती ने सहायक निर्देशन की भूमिका में 'अंधा युग' नाटक किया. निर्देशन के रूप में पहला नाटक 'यक्षिणी' को उन्होंने किया. इसका तीन बार उन्होंने मंचन किया. भामाशाह, जयचंद के आंसू, मैं हूं पटना संग्रहालय, नया बंगला व अन्य नाटकों का भी उन्होंने निर्देशन किया है. वे नाटकों में शिक्षा को जोड़ कर प्रदर्शन करती हैं.

सुनीता भारती

Sunita Bharti is known for her exemplary work of incorporating theater with education. This maiden effort of hers is aimed at creating a new genre of theater audience, conservation of cultural heritages and tradition and expanding the scope of theater as a tool of teaching.

Other unique directorial ventures of Sunita Bharti

Yakshini

The first Hindi play based on an archaeological artifact, the Didarganj Chawri Bearer Female Figure, popularly known as Didarganj Yakshini. The play is the first example of theatre in Public Museology also.

Bhamashah

She produced and directed Bhamashah successfully, as a part of her praiseworthy campaign of popularizing and reconstructing the aura of our forgotten/less known historical heroes/icons among the masses with the message of “Love for Nation”.

Produced By

FACES

Foundation for Art Culture Ethics & Science (FACES)

(Reg. under Society Registration Act XXI 1860)

Kamta Singh Lane East Boring Canal Road, Patna – 800001

Website: www.faces.org.in Email: facespatna@gmail.com

www.youtube.com/c/FoundationforArtCultureEthicsScienceFACES

[Short Link: https://goo.gl/YXB7ro]

Contact: 9570085004